M. Europe. Paper IV

Q. 1848 की फरवरी क्रांति

Ans:- फरवरी 1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति एक साथ काम कर रहे कई कारणों की परिणाम थी। 1830 में फ्रांस के लोगों ने एक ऐसे शासक का सपना देखा था जो उनके सामाजिक एवं आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा करेगा लेकिन (वो) लुई फिलीप की प्रतिक्रियावादी शासन नीति एवं औपनिवेशिक विदेश नीति से ऊब गए थे।

1838 में क्रांतिकारियों की आशा धीरे-धीरे प्रतिक्रिया में बदल गई। लोगों ने सामान्य मताधिकार एवं एक सुधारवादी प्रबुद्ध राजा की आकांक्षा की थी लेकिन लुई फिलीप ने राजनीतिक मुक्ति-आन्दोलन का विरोध किया तथा मताधिकार के विस्तार एवं संसदीय सुधार की माँग मानने से इंकार किया। क्रमशः जनमत इसका विरोधी बनता गया और वे क्रांतिकारी विचारों की सफलता की कामना करने लगे।

मध्यमवर्ग का प्रभाव — क्रांति का एक मौलिक कारण मध्यमवर्ग का स्वार्थीपन था जिसने अपने को सत्ता के साथ जोड़ लिया था। लुई फिलिप को मध्यमवर्ग के समर्थन से गद्दी मिली थी इसीलिए वह इस वर्ग के प्रति वफादार बना रहा। सारे राजनीतिक अधिकारों, मताधिकार एवं सरकार पर इस वर्ग का एकाधिकार था। आंतरिक एवं विदेश नीति का संचालक यही वर्ग था। फलतः सामान्य लोग अभिजात वर्ग इसके विरोधी बन गए।

समाजवाद का उदय — फ्रांस में यह औद्योगिक क्रांति का काल था। अतः औद्योगिक क्रांति की सामान्य बुराइयाँ जैसे- मजदूरों से अधिक घंटे काम लेना, औरतों एवं बच्चों से काम लेना, मजदूरों का गंदी बस्तियों में रहना, उन्हें कम मजदूरी मिलना, हड़ताल का अधिकार नहीं मिलना आदि फ्रांस में भी पैदा हुई। मजदूर समस्याओं पर सेंट साइमन एवं लुई ब्लाक जैसे समाजवादियों ने अपने वक्तव्य दिए। सबों ने पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना की एवं मजदूरों की स्थिति में सुधार की माँग की लेकिन लुई फिलिप की सरकार मजदूरों की समस्याओं से अपना ध्यान अलग किये हुए थी। अतः एक आर्थिक विस्फोट अनिवार्य हो गया था।

लुई फिलिप के विदेश नीति — लुई फिलिप की विदेश नीति ने फ्रांस की प्रतिष्ठा को गिराया एवं फ्रांस के लोगों की गौरव की भावना को चोट पहुँचाया। जब 1830 में बेल्जियम की जनता ने अपने देश का ताज लुई फिलीप के लड़के को सौंपा तो इंगलैण्ड के हस्तक्षेप से डरकर लुई फिलीप ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसी तरह पोलैण्ड के आन्दोलनकारियों को रूस की सरकार कुचलती रही लेकिन लुई फिलीप ने पोलैण्डवासियों को कोई सहायता नहीं की। जबकि लुई फिलीप ने ही पोलैण्ड के आन्दोलनकारियों

को प्रेरित किया था एवं उकसाया था। फिर, पूर्वी समस्या के समाधान में यूरोप के प्रमुख देशों ने 1840 में लन्दन का समझौता कर लिया लेकिन फ्रांस को इस सम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया। यह निश्चित रूप से फ्रांस का अपमान था। अतः हर वैदेशिक मामले में फ्रांस की क्रांतिकारियों को खटका लगा। स्वाभाविक रूप से फ्रांसीसी ऐसी स्थिति से ऊब गए थे।

नेपोलियन बोनापार्ट के प्रशंसकों का समर्थन करके तथा बोनापार्ट के पार्थिव शरीर को सेंट हेलेना से पेरिस लाकर लुई फिलीप ने अपने एक और दुश्मन को बढ़ा लिया। बोनापार्टिस्ट उसके लिए दिक्कत पैदा करते ही रहे।

लुई फिलिप का पतनकारण

क्रांति फ्रांस की प्रतिक्रियावादी सरकार के विरुद्ध विद्रोहात्मक कार्यवाहियों के रूप में शुरू हुई। मुख्य मुद्दा था - मताधिकार को विस्तृत किए जाने का प्रश्न। अपनी मांगों की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए प्रचार भोजों का आयोजन किया गया। इसी तरह के एक प्रचार भोजन ने 22 फरवरी 1848 को क्रांति का रूप ले लिया। गीजो को बर्खास्त करने एवं सुधार लागू करने के बाद भी लोग संतुष्ट नहीं हुए। पुलिस ने गोली चलाकर स्थिति को और भी बेकाबू कर दिया। लुई फिलीप को गद्दी छोड़कर भागना पड़ा। क्रांति में प्रमुख भूमिका समाजवादियों एवं श्रमिकों ने निभाई। उन्हीं के प्रयास से फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना हुई।